ग्लोबल वार्मिंग से निपटने की जरुरत

संजय गोस्वामी

ग्लोबल वार्मिंग के पैटर्न विभिन्न कारकों से प्रभावित होते हैं. जिनमें क्षेत्रीय परिवर्तनशीलताए अल नीनो जैसी प्राकृतिक घटनाएं और मानव.प्रेरित जलवायु परिवर्तन भी शामिल हैं। हालांकि 1ण्5 डिग्री सेल्सियस जैसी तापमान सीमाएं इस समय महत्वपूर्ण बेंचमार्क के रूप में काम करती हैं। इसके लिए प्रभावी जलवायु अनुकूलन और शमन के लिए वार्मिंग पैटर्न के स्थानिक वितरण और अस्थायी विकास को समझना आवश्यक है।

ग्लोबल वार्मिंग स्थानीय परिस्थितियोंए ऐतिहासिक परिघटनाओं और अल नीनो जैसी प्राकृतिक परिवर्तनशीलता सहित विभिन्न कारकों से प्रभावित एक जटिल महासागरीय घटना है। वर्तमान वैश्विक लक्ष्य इस समय 1ण्5 डिग्री सेल्सियस तक तापमान सीमा को नियंत्रित करना है। अतः इस संदर्भ मेंए संबंधित जलवायविक आपदाओं को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करने के लिए ग्लोबल वार्मिंग के पैटर्न को समझना अनिवार्य है। इसी संदर्भ में पैलियो प्रॉक्सीए वैज्ञानिकों द्वारा अतीत की जलवायु तथा पर्यावरणीय स्थितियों के पुनर्निर्माण के लिये उपयोग किये जाने वाले संकेतक या रिकॉर्ड हैं।जंगल की आगए चक्रवातए सूखा और बाढ़ जैसी जलवायु आपदाओं के साथ.साथ विगत वर्ष 2023 में वार्मिंग या उच्चतम उष्णता के कई रिकॉर्ड टूट गए। इस समयए वैज्ञानिकों की भागीदारी के साथ .साथ अक्सर इस बात पर भी चर्चा रही है कि क्या हमने 1ण्5 डिग्री सेल्सियस की वार्मिंग सीमा को पार कर लिया है। सबसे सटीक अनुमानए विभिन्न उपकरणों द्वारा रिकॉर्ड किए गए आंकड़ों से प्राप्त होता हैए जिसके अनुसार पृथ्वी का तापमान अभी इस सीमा के ठीक नीचे है। पैलियो प्रॉक्सीज कोरलए स्टैलेक्टाइट्स और स्टैलेग्माइट्स जैसे कार्बनिक पदार्थों में संग्रहीत रासायनिक साक्ष्य का उपयोग करके ऐतिहासिक तापमान रुझानों में मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं। उनकी उपयोगिता के बावजूदए इन प्रॉक्सी की सीमाएँ हैं और ये तापमान परिवर्तन का केवल अप्रत्यक्ष प्रमाण प्रदान करते हैं। वर्तमान शोधकताओं द्वारा आत्मसात किए गए रासायनिक यौगिकों को पिछले तापमान के अनुमान के अनुसार सावधानीपूर्वक जांचते हैं। हालाँकिए ये प्रॉक्सी कारक स्थानीय तापमान की विसंगति का अनुमान लगाते हैं और उसे पूरी तरह से प्रतिस्थापित नहीं कर सकते हैं। इसके अलावाए नेचर पत्रिका में प्रकाशित एक हालिया अध्ययन ने यह सुझाव देकर विवाद उत्पन्न कर दिया हैए कि पृथ्वी की सतह पहले से ही पैलियो.थमोर्मेट्री के आधार पर पूर्व.औद्योगिक स्तरों से 1ण्5 डिग्री सेल्सियस से अधिक गर्म हो चुकी है। हालाँकिए इस अध्ययन की सीमित डेटा पर निर्भरताए वैश्विक रुझानों पर इसकी प्रयोज्यता को लेकर संदेहास्पद बनाती है।जलवायु विज्ञान में प्रगति के बावजूदए ग्लोबल वार्मिंग के पैटर्न को समझने में काई बाधाएं आज भी विद्यमान हैं। अल नीनो घटनाओं और क्षेत्रीय विविधताओं सहित वार्मिंग पैटर्न को प्रभावित करने वाले कारकों की

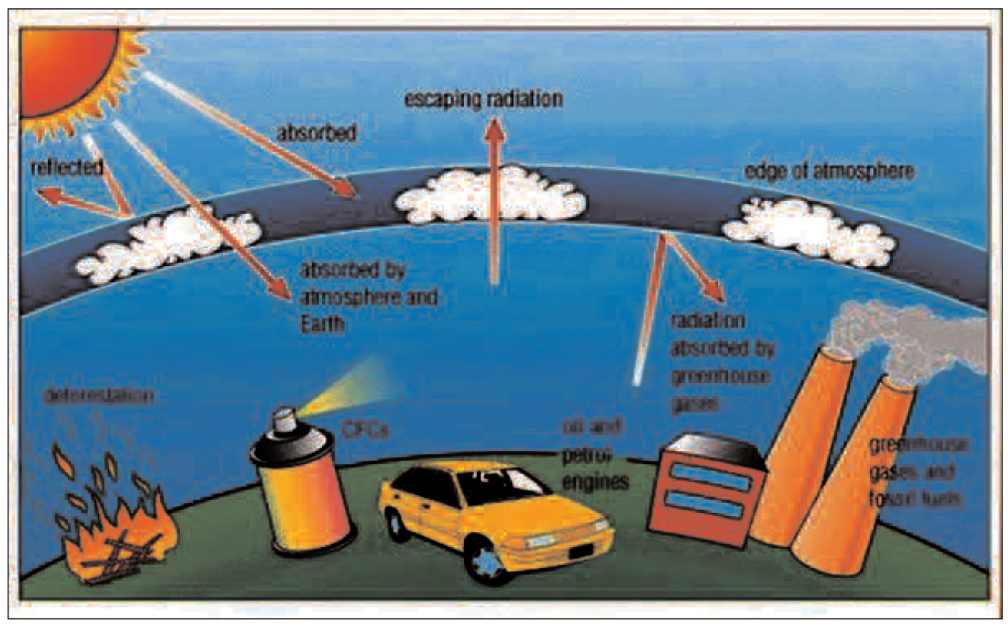

जटिलताए शोधकताओं के लिए कई चुनौतियां उत्पन्न करती हैं। उदाहरण के लिएए भारत में वर्ष 2023 के मानसून का वितरण और तीव्रता स्पष्ट नहीं है। यह अस्पष्टताए अल नीनोए ग्लोबल वार्मिंग और स्थानीय जलवायु घटनाओं के बीच जटिल अंतरसंबंध को उजागर करता है। इसके अलावाए वार्मिंग पैटर्न की व्यापक समझ का अभाव जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करने की हमारी क्षमता को कमजोर करता है। अतः बदलते मौसम के अनुकूल ढलने और आजीविका सहित अर्थव्यवस्था पर प्रतिकूल प्रभाव को कम करने के लिए वार्मिंग पैटर्न की सटीक भविष्यवाणी आवश्यक हैएअल नीनो घटनाएँ उष्णकटिबंधीय प्रशांत महासागर में गर्मी का पुनर्वितरण करके ग्लोबल वार्मिंग पैटर्न को नियंत्रित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। अल नीनो विभिन्न वर्षों के दौरानए समुद्र की गर्मी को अवशोषित करता है और उसे मुक्त भी करता हैए जिससे वैश्विक तापमान में उतार.चढ़ाव होता रहता है इसे टेलीकनेक्शन के रूप में जाना जाता है। अल नीनो घटनाओं के दौरान वार्मिंग का स्थानिक वितरण अलग.अलग होता हैए जिससे क्षेत्रीय जलवायु पर अलग.अलग प्रभाव पड़ता है।इसके अलावाए अल नीनो टेलीकनेक्शन विशिष्ट क्षेत्रों में तापमान विसंगतियों को बढ़ाने या कम करने के लिए ग्लोबल वार्मिंग से प्रत्यक्षतः संबंधित हैं। उदाहरण के लिएए अल नीनो द्वारा संचालित कैलिफोर्निया में हाल ही में आई बाढ़ए प्राकृतिक परिवर्तनशीलता और मानवजनित जलवायु परिवर्तन के बीच जटिल पारस्परिकता को रेखांकित करती है। इसीलिए वार्मिंग पैटर्न की सटीक भविष्यवाणी और संबंधित जोखिमों के प्रबंधन के लिए इन गतिशीलता को समझना अनिवार्य है।ग्लोबल वार्मिंग का प्रभाव क्षेत्रीय रूप से भिन्न होता है। यह स्थानीय अनुकूलन रणनीतियों की आवश्यकता को रेखांकित करता है। इस कारण आर्कटिक क्षेत्रों और रेगिस्तानी क्षेत्रों में बढ़ी हुई गर्मी का अनुभव होता हैए जबकि तटीय क्षेत्रों में समुद्री प्रभावों के कारण इसके कम प्रभाव दिखते हैं। अतएव जलवायु अनुरूप अनुकूलन उपायों को विकसित करने और जलवायु परिवर्तन के प्रतिकूल प्रभावों को कम करने के लिए क्षेत्रीय परिवर्तनशीलता को समझना आवश्यक है। इसके अलावाए नीतिगत निर्णयों को सूचित करने और संसाधनों को प्रभावी ढंग से आवंटित करने के लिए क्षेत्रीय वार्मिंग पैटर्न की सटीक भविष्यवाणी आवश्यक है। क्षेत्रीय जलवायु मॉडल और अवलोकन डेटा को एकीकृत करकेए वैज्ञानिकय जलवायु अनुमानों की सटीकता बढ़ा सकते हैं और लक्षित हस्तक्षेप विकसित करने में नीति निमार्ताओं की सहायता कर सकते हैं।जलवायु मॉडल भविष्य में वार्मिंग पैटर्न की भविष्यवाणी करने और शमन उपायों के प्रभाव का आकलन करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ये मॉडल वैश्विक जलवायु गतिशीलता का अनुकरण करने के लिए ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जनए भूमि उपयोग परिवर्तन और प्राकृतिक परिवर्तनशीलता सहित विभिन्न कारकों को एकीकृत करते हैं। हालाँकिए मॉडल अनुमानों में अनिश्चितताओं के लिए अवलोकन संबंधी डेटा के विरुद्ध निरंतर शोधन और सत्यापन की आवश्यकता होती है। इसके अलावाए मशीन लर्निंग और डेटा एसिमिलेशन तकनीकों में प्रगति जलवायु मॉडल की सटीकता में सुधार और भविष्य के अनुमानों में अनिश्चितताओं को कम करने का वादा करती है। मॉडल सिमुलेशन के साथ अवलोकन संबंधी डेटा को एकीकृत करकेए वैज्ञानिक जलवायु पूवार्नुमानों की विश्वसनीयता बढ़ा सकते हैं और साक्ष्य.आधारित निर्णय लेने की जानकारी दे सकते हैं। ग्लोबल वार्मिंग के पैटर्न विभिन्न कारकों से प्रभावित होते हैं. जिनमें क्षेत्रीय परिवर्तनशीलताए अल नीनो जैसी प्राकृतिक घटनाएं और मानव.प्रेरित जलवायु परिवर्तन भी शामिल हैं। हालांकि 1ण्5 डिग्री सेल्सियस जैसी तापमान सीमाएं इस समय महत्वपूर्ण बेंचमार्क के रूप में काम करती हैं। इसके लिए प्रभावी जलवायु अनुकूलन और शमन के लिए वार्मिंग पैटर्न के स्थानिक वितरण और अस्थायी विकास को समझना आवश्यक है। पैलियो प्रॉक्सी के संभावित लाभ सहित जलवायु मॉडल को आगे बढ़ाना और अवलोकन डेटा को एकीकृत करकेए वैज्ञानिक ग्लोबल वार्मिंग पैटर्न के बारे में हमारी समझ को बढ़ा सकते हैंए साथ ही भविष्य के अनुमानों की सटीकता में सुधार कर सकते हैं। इसके अलावाए जलवायु परिवर्तन से उत्पन्न चुनौतियों का समाधान करने के लिए समग्र समाधान विकसित करने के लिए अंतःविषय सहयोग और हितधारक जुड़ाव अनिवार्य हैं। अंततः पैलियो प्रॉक्सी अध्ययन को प्राथमिकता देकर और मजबूत वैज्ञानिक अनुसंधान में निवेश करकेए हम जलवायु परिवर्तन के प्रतिकूल प्रभावों को कम कर सकते हैं और आने वाली पीढ़ियों के लिए अधिक सुरक्षित भविष्य का निर्माण कर सकते हैं।

संपादकीय

छिपाइए नहीं, बताइए

लोकतांत्रिक शासन में चुनाव से ही पारदर्शिता और निष्पक्षता बरतने का आग्रह एक न्यूनतम अपेक्षा है। आंतरिक एवं बाह्य सुरक्षा एवं इनसे जुड़े विदेशी समझौतों को ही इसके दायरे से बाहर रखा जा सकता है। पर देश के राजनीतिक दलों को जिस इलेक्ट्रोल बांड के जरिए चंदा देने की व्यवस्था अपारदर्शी भीत्ति पर बनाई गई थी। इससे यह खुलासा नहीं हो रहा था कि कब, कौन, किस पार्टी को और कितना धन चंदे में दे रहा है। सर्वोच्च न्यायालय ने बांड जारी करने वाला एकमात्र बैंक एसबीआई है, नियमतः यह काम आरबीआई का था, उसे 15 फरवरी को ही इसके सारे ब्योरों को चुनाव आयोग को देने की बात कही थी ताकि वह अपनी साइट पर सार्वजनिक करे। पर एसबीआई जो वित्त मंत्रालय के अधीन है, उसने न्यायालय के निर्देश का दो हिस्सों में और वह भी आधा-अधूरा पालन किया। बैंक ने पहले हिस्से में बांड खरीद की तारीख, खरीदने वालों के नाम और उसकी कीमत बताई है। दूसरे में बांड को भुनाने की तारीख, पार्टी के नाम और उसकी कीमत दी है। एक तीसरी कॉपी भी जारी की है, जिसमें बांड की कीमत, उसे देने और भुनाने वालों के नाम और तिथियां हैं। ये आयोग की वॉल पर हैं। पर इनमें वह यूनिक कोड नहीं है, जिससे तमाम ब्योरों का समग्रता में खुलासा करने और इस तरह सरकार बनने की पहली दहलीज से ही पण्राली में पारदर्शिता लाने का न्यायालय का मूल मकसद ही नहीं पूरा हो रहा है। इसलिए मुख्य न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़ को बांड के यूनिक कोड के साथ तमाम ब्योरे 21 मार्च को शाम 5 बजे से पहले अंतिम रूप से जारी करने के लिए एसबीआई को कड़ी फटकार लगानी पड़ी। न्यायालय चाहता है कि बैंक यूनिक कोड के साथ एक समग्र और अंतिम ब्योरा दे। इसके लिए उसे दो हिस्सों में ब्योरा देना होगा। पहले में बांड के खरीदने की तारीख, खरीदने वालों के नाम, उसके यूनिक कोड, और उसकी कीमत हो। दूसरे हिस्से में, बांड भुनाने की तारीख, भुनाने वाली पार्टी, बांड के यूनिक कोड और उसका मूल्य दिया जाए ताकि आम जन बांड खरीदने वाले और इसको भुनाने वाले के साथ मिलान कर सके। इससे पार्टियां और उन्हें चंदे देने वाली कंपनी-घरानों की नींद उड़ी हुई है। पर सर्वोच्च न्यायालय की पहल से चुनावी चंदे की स्वीकार्य नैतिक व्यवस्था बनेगी जिसका असर चुनावों के बेलगाम खर्चे पर नियंतण्रके रूप में होगा। इसके लिए देश में कब से चल रही बहस एक निर्णायक आकार ले सकेगी।

चिंतन-मनन

विवेक ही धर्म है

युग के आदि में मनुष्य भी जंगली था। जब से मनुष्य ने विकास करना शुरू किया, उसकी आवश्यकताएं बढ़ गई। आवश्यकताओं की पूर्ति न होने से समस्या ने जन्म लिया। समस्या सामने आई तब समाधान की बात सोची गई। समाधान के स्तर दो थे- पदार्थ-जगत, मनो-जगत. प्रथम स्तर पर पदाथरे के सुनियोजित उत्पादन और उनकी व्यवस्था को आकार मिला। दूसरा स्तर मानसिक था। इस जगत की समस्याएं थी अपरिमार्जित वृत्तियां, असंतुलन और तनाव।

इन समस्याओं को समाहित करने के लिए धर्म की खोज हुई। धर्म का अर्थ है पारंपरिक मूल्य-मानकों से परे हटकर मनुष्य को सत्य की दिशा में अग्रसर करना। जब तक धर्म अपने इस परिवेश में रहता है, तब तक वह रूढ़ नहीं हो सकता। पर उद्देश्य की विस्मृति के साथ ही उसमें रूढ़ता आ जाती ह। रूढ़ धर्म को व्यक्ति अपने जीवंत संदभरे से काटकर परलोक के साथ जोड़ देता है। बस यहीं से धर्म में विकृति का प्रवेश होने लगता है। मैं ऐसा सोचता हूं कि धर्म का संबंध हमारी हर सांस से होना चाहिए। ऐसा वे ही व्यक्ति कर सकते हैं जो अपने जीवन की सतह पर दौड़-धूप कर रहे हैं। या फिर यह उन लोगों का काम है जो जीवन की गहराइयों में उतरकर अध्यात्म के प्रति समर्पित हो जाते हैं।

जीवन की सतह पर जीने वाले व्यक्ति धर्म की गहराई में नहीं उतर सकते, किंतु अध्यात्म के प्रयोक्ता की दृष्टि से वह गहराई छिपी नहीं रह सकती। जो व्यक्ति उतनी गहराई में उतरे, उन्हें धर्म की विकृतियों का बोध हुआ। जो धर्म मन को समाधान देने वाला था, वह स्वयं समस्या बनकर उभर गया। इस दृष्टि से उसमें संशोधन व परिवर्तन की अपेक्षा अनुभव हुई। अणुव्रत उसी आवश्यकता का आविष्कार है। यदि धर्म एक समस्या बनकर सामने नहीं आता तो उसे अणुव्रत के रूप में प्रस्तुति देने का कोई अर्थ ही नहीं था। अणुव्रत धर्म के साथ विवेक की अपरिहार्यता पर बल देता है। आगम की भाषा में विवेक ही धर्म है।

भारत का सबसे बडा फाल्गुन मेला खांटूधाम का..

सज्जन कुमार गर्ग

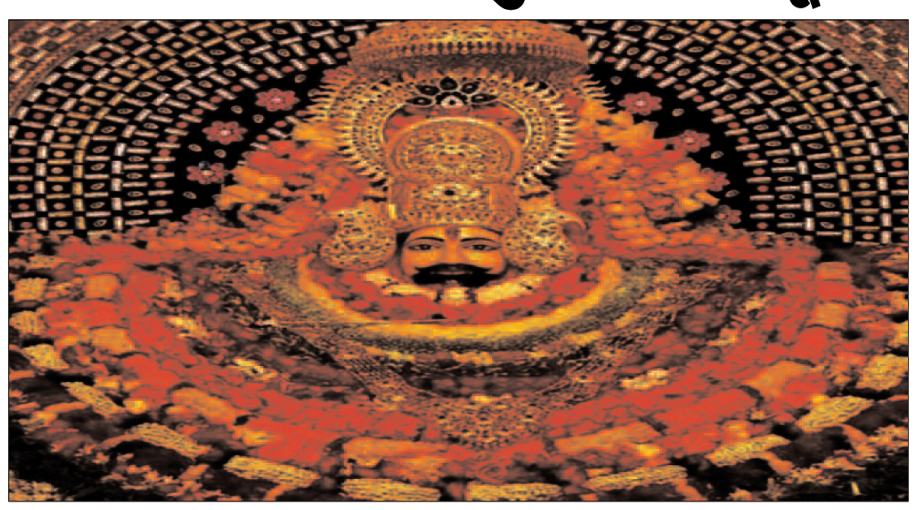

भारत का सबसे बडा फाल्गुन मेला खांटू धाम का मेला हैं इसकी प्रसिद्धि पूरी दुनिया मे हैं। यहां ग्यारह मार्च से आरंभ फाल्गुन मेला पूरे परवान पर है। पूरा क्षेत्र जय श्री श्याम के जय घोष से गुंजायमान हो रहा हैं। मेला में देश दुनिया के लाखो श्याम भक्त विश्व प्रसिद्ध खांटूधाम श्री श्याम बाबा के दरवार मे पहुंच अपनी हाजरी लगा रहे हैं। लोक मान्यता हैं कि बाबा श्याम हारे हुए के साहरा हैं अर्थात जिस व्यक्ति का कोई साहरा नही वह खांटू श्याम के शरण मे आता है तो उसकी सारी समस्या का हल निकला आता है,हर साल फाल्गुन महीने की एकादशी को बाबा खांटूश्याम का जन्मोत्सव मनाया जाता हैं,इस मौके पर देश विदेश के लाखों श्रदालुयौ का समागम मेले मे दिखता हैं और सब श्याम के रंग में रंगे दिखते हैं।

प्रभु श्याम बाबा मंदिर राजस्थान के सीकर जिले में स्थित है,और इसे राज्य के सबसे महत्वपूर्ण तीर्थ स्थलों में से एक माना जाता है। हिंदू पौराणिक कथाओं के अनुसार, खांटू श्याम जी घटोत्कच के पुत्र बर्बरीक के अवतार हैं। ऐसा कहा जाता है कि जो भक्त अपने दिल की गहराई से उनके नाम का उच्चारण करते हैं, वे धन्य हो जाते हैं और उनके संकट दूर हो जाते हैं।

इसी श्रृंखला मे मुंगेर जमालपुर भागलपुर बाकां लखीसराय पटनासिटी झारखंड के वडहरवा सहित देश के विभिन्न क्षेत्रो मे श्याम भक्तो की टोलियां खांटूधाम फाल्गुन मेला,निशान यात्रा मे हिस्सा पहुंच है।

पौराणिक कथाओं के अनुसार, महाभारत की लड़ाई शुरू होने से पहले, बर्बरीक की शक्ति को बेजोड़ कहा जाता था। उसने कमजोर पक्ष का पक्ष लेने का फैसला किया था ताकि वह न्यायपूर्ण रह सके, एक ऐसा निर्णय जिसके परिणामस्वरूप दोनों पक्षों का पूर्ण विनाश हो जाएगा केवल बर्बरीक ही जीवित बचेगा ऐसा कहा जाता है कि इस तरह के विनाशकारी परिणामों से बचने के लिए श्रीकृष्ण ने बर्बरीक से उसका सिर (शीश दान) मांगा, जिसके लिए वह सहर्ष तैयार हो गये। श्री कृष्ण उनके प्रति दिखाई गई भक्ति और बर्बरीक के महान बलिदान से बेहद खुश थे कि उन्होंने उन्हें एक वरदान दिया, जिसके अनुसार कलियुग (वर्तमान समय) में बर्बरीक को कृष्ण के अपने नाम, श्याम जी के नाम से जाना जाएगा और उनके स्वरूप में पूजा की जाएगी।

खाटू श्याम कैसे पहुंचे खांटू श्याम का मंदिर जयपुर से 80 किमी दूर खांटू गांव में मौजूद है। खांटू श्याम जी पहुंचने के लिए सबसे पास का रेलवे स्टेशन रिंगस है। जहां से बाबा के मंदिर की दूरी 18.5 किमी है। रेलवे स्टेशन से निकलने के बाद आपको मंदिर के लिए टैक्सी और जीप ले सकते हैं। अगर आप फ्लाइट से जा रहे हैं, तो सबसे नजदीकी एयरपोर्ट जयपुर इंटरनेशनल एयरपोर्ट है। यहां से मंदिर की दूरी 95 किमी है। अगर आप दिल्ली से बाय रोड खांटू श्याम मंदिर जा रहे हैं, तो आपको पहुंचने में करीबन 4 से 5 घंटे का समय लगेगा।

पैरट फीवर : कहीं कोरोना का रूप न ले ले

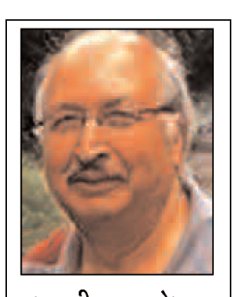

भगवती प्रसाद डोभाल

विश्व चार वर्षों से कोरोना की मार से मुक्त भी नहीं हो पाया है; अभी भी इसके कारण आए दिन तरह-तरह के वेरिएंट पैदा होने से बीमारी पीछा नहीं छोड़ रही है, दिल्ली में पिछले महीने कोरोना ने तेजी पकड़ी तो दूसरी ओर चमगादड़ों की उपस्थिति ने एक नई बीमारी को जन्म दिया है; अब तोते से बीमारी फैलने के समाचार मिल रहे हैं। यह कैसे फैल रही है, इसकी जानकारी यूरोप के देशों से मिली है। इस बीमारी को 'पैरट फीवर' नाम दिया गया है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने चेतावनी दी है कि पक्षियों को संक्रमित करने वाली यह बीमारी अब इंसानों को भी चपेट में ले रही है। 2023-24 में ऑस्ट्रिया, डेनमार्क, जर्मनी, स्वीडन और नीदरलैंड में असामान्य रूप से पैरट फीवर की बीमारी फैली है; इसके कारण अनेक लोगों की मौत हुई है और कई बीमार हुए हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार सी. सिटासी 450 से अधिक पक्षी प्रजातियों के साथ जुड़ी हुई बीमारी है; इसे कुत्ते, बिल्ली, घोड़े, सूअर और सरीसृपों-जैसी विभिन्न प्रजातियों में भी पाया गया है। पक्षी विशेष रूप से पालतू पक्षी अक्सर मानव साइटोसिस पैदा करने में शामिल होते हैं। यह ज्ञात हो चुका है कि पैरट फीवर क्लैमाइडिया सिटासी वैक्टीरिया के कारण होता है। तोते, कबूतर और मुर्गी इस जीवाणु के शिकार हो रहे हैं, इन पक्षियों से रोग फैल रहा है, कबूतर हर घर में मिल जाता है; घर में बीट भी कर जाता हैं, बीट के संपर्क में आने से बैक्टीरिया व्यक्ति को प्रभावित कर रहे हैं।

यह भी पता चला है कि यह बीमारी सभी स्तनधारियों में फैल सकती है, जिनमें कुत्ते, बिल्ली और घोड़े शामिल हैं। वातावरण में क्लैमाइडोफिला सिटासी बैक्टीरिया की उपस्थिति के कारण सांस लेने पर सिटकोसिस से संक्रमित हो सकते हैं। यह पंखों और अंडों से भी फैल सकती है। सांस लेते समय यह जीवाणु व्यक्ति के शरीर यानी फेफड़ों में सीधे पहुंच जाता है। तनाव भी गंभीर लक्षण का कारक होता है, जिसके कारण मरीज की तेजी से स्थिति बिगड़ती है और मृत्यु भी हो जाती है। कोशिका विभाजन के दौरान यह बीमारी भी तेजी से बढ़ती है, इसमें 16एस-आर आरएनए जीन होते हैं, जो सभी मनुष्यों में फैलने में सहायक होते हैं। ज्यादातर लोग संक्रमित पक्षियों, विशेषकर तोते या पालतू जानवरों की सांस, मल या पंखों की धूल से निकलने वाले कणों को सांस के माध्यम से लेकर बीमारी के शिकार हो जाते हैं।

इस बीमारी की संभावना उन लोगों में होने की ज्यादा है, जो मुर्गीपालक, पशु चिकित्सक और पालतू पशु पालक हैं। बीमारी के लक्षण फ्लू-जैसे हैं बुखार, ठंड लगना, सिर दर्द और सूखी खांसी और किसी व्यक्ति के बैक्टीरिया के संपर्क में आने के पांच से 14 दिनों के भीतर दिखाई देते हैं। सेंटर्स फॉर डिजीज कंट्रोल एंड प्रिवेंशन (सीडीसी) के आंकड़ों के अनुसार अमेरिका में 2010 के बाद हर वर्ष पैरट फीवर के करीब 10 मामले सामने आते रहे हैं। हालांकि कई मामलों के निदान के आंकड़े उपलब्ध नहीं हो पाए क्योंकि इस बीमारी के लक्षण अन्य बीमारियों की तरह नहीं दिखे। जैसा कि नाम से पता चल रहा है कि यह रोग पक्षियों से होता है। हालांकि तोते ही इस संक्रमण के कारक नहीं हैं; अन्य जंगली और पालतू पक्षी भी संक्रमण फैला सकते हैं। संक्रमित पक्षियों में जरूरी नहीं कि बीमारी के लक्षण दिखें। बिना किसी लक्षण के वे महीनों बैक्टीरिया के साथ रह जाते हैं, लेकिन इंसान में वे लक्षण खांसी, सांस लेने में कठिनाई और सीने में दर्द के साथ निमोनिया-जैसे लक्षणों से प्रकट होते हैं। कुछ लोगों में बुखार, मांसपेशियों में दर्द, सिर दर्द और पेट की तकलीफ के लक्षण होते हैं।

स्वास्थ्य विशेषज्ञों के अनुसार सामान्य जुकाम-जैसे लक्षणों के अलावा कुछ लोगों में पैरट फीवर की समस्या गंभीर हो जाती है। इसलिए इस रोग का समय पर निदान जरूरी है, गंभीर परिस्थितियों में सीने में दर्द, सांस लेने में तकलीफ और प्रकाश के प्रति संवेदनशीलता के लक्षण सामने आ जाते हैं। कई मामलों में मस्तिष्क, लिवर और दिल में सूजन भी आ जाती है। इससे फेफड़ों की कार्यक्षमता भी शिथिल हो जाती है; निमोनिया होने की स्थिति भी बन जाती है। पैरट फीवर के इलाज के लिए स्वास्थ्य विशेषज्ञों के अनुसार निदान होने पर कुछ दवाओं को लिया जा सकता है। इसमें एंटीबायोटिक दवाएं ली जा सकती हैं लेकिन इनका इस्तेमाल डॉक्टर की सलाह से ही करना चाहिए क्योंकि विभिन्न व्यक्तियों की शारीरिक परिस्थितियां भिन्न होती हैं। यदि आपके पास पालतू पक्षी हैं, तो जहां उन्हें रखा गया है, उस स्थान की साफ-सफाई नियमित करनी चाहिए।

विश्व स्वास्थ्य संगठन की सलाह है कि रोकथाम और नियंत्रण के लिए: आरटीपीसीआर का उपयोग करके निदान के लिए सी. सिटासी रोग के संदिग्ध मामलों का परीक्षण करने के लिए चिकित्सकों में जागरूकता बढ़ाने का सभी लोग प्रयास करें, तभी बीमारी पर नियंत्रण पाने में सफलता मिल सकती है। पैरट फीवर कोरोना-जैसा रूप न ले ले, इसके लिए सभी देशों को सामूहिक जिम्मेदारी से प्रयास करने चाहिए। कुछ लोगों का तो यह भी मानना है कि अमेरिका को इस बीमारी का पता था और इसका प्रयोग वह जीवाणु युद्ध के लिए भी करना चाहता था लेकिन अंतरराष्ट्रीय संधि ने इसके प्रयोग को रोकने की पहल की जिससे अमेरिका ने इसका प्रयोग स्थगित कर दिया था।